समझो ज्ञान योग का राज बनकर मास्टर ज्ञान सागर
योग बल से सदा रखो कर्मेन्द्रियों को शीतल बनाकर
कर्मेन्द्रियों की चंचलता हमसे विकर्म कितने कराती है
श्रीमत को भूलाकर हमें विकारों के दलदल में गिराती है
कर्मेन्द्रियों के गुलाम होकर जब कोई कर्म करते हैं हम
इसी एक गलती के कारण जीवन में आता कितना गम
कर्मेन्द्रियों के वशीभूत आत्मा पाप ही करती जाती है
63 जन्मों तक पापों का बोझ अपने सर पे चढ़ाती है
पापों का बोझ उतारना है तो शिव बाबा को याद करो
कोई पाप करने से पहले धर्मराज की सजाओं

से डरो
अल्बेलेपन में समय ना गँवाओ जब तक है
बाबा साथी
अंत समय अचानक आएगा तो बाबा बन
जाएगा साक्षी
फिर कोई भी पुरुषार्थ करने का समय नहीं
मिल पाएगा
पुरुषार्थ ना कर सकने का कोई बहाना नहीं
चल पाएगा
जिस किसी भी हालत में होंगे बाबा हमें साथ
ले जाएगा
धर्मराज का रूप धरकर हमारे सारे पाप हमें
दिखाएगा
हमारे विकर्मों की सजाएं गिन गिनकर हमें
खिलाएगा
समय ऐसा होगा जब नैनों से पछतावे के आंसू
बरसेंगे
बिना रुके तब चारों और से सजाओं के कोड़े
बरसेंगे

धर्मराज हम पर ऐसे समय बिलकुल रहम नहीं खाएगा
बाबा की अवज्ञा का क्या है दंड अच्छी तरह बताएगा
समझाना था काम मेरा अब ये निर्णय तुम पर छोड़ा
धर्मराज के आने में अब समय बचा है बहुत ही थोड़ा
बाप के आगे ना दिखाओ बच्चों अब इतनी होशियारी
धर्मराज ने भी डंडे बरसाने की कर ली है पूरी तैयारी
ॐ शांति